International Journal of Education and Science Research Review
Volume-I, Issue-6 December- 2014 E-ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

जनपद कासगंज में खाद्य पदार्थ, पोषण तथा जनित रोगों का भौगोलिक मूल्यांकन

मनोज कुमार
शोधकर्ता
सन राइज विश्वविद्यालय, अलवर

डा0वी0के0तोमर
शोध निर्देशक
सन राइज विश्वविद्यालय, अलवर

सार–
किसी भी राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों का उतना ही महत्व होता है जितना कि मानव संसाधनों का। वास्तव में मानवीय संसाधन एवं प्राकृतिक संसाधन एक ही गाड़ी के दो पहियों के समान है। मानवीय संसाधन से तात्पर्य, जनसंख्या, उसकी शिक्षा, कार्य कुशलता, दूरदर्शिता तथा उत्पादकता से होता है। मानवीय संसाधन एक ऐसी पूंजी है जो किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के विकास में पूर्ण सहयोग प्रदान करती है।

जिला परिचय–
कासगंज उत्तर प्रदेश का एक जिला है जो 27° 49′N 78 डिग्री 39′E पर स्थित है तथा इसकी 27.82° N 78.65° E/27.82; 78.65 एवं 177 मीटर (580 फुट) की औसत ऊंचाई है। यह जिला पवित्र नदियों गंगा और यमुना और ससनअपनउ मिट्टी भूमि सबसे उपजाऊ क्षेत्रों में से एक है तथा गंगा और यमुना के बीच क्षेत्र में स्थित है। यहा के गांव की जनसंख्या मुख्यतः कृषि और संबंधित आर्थिक गतिविधियों पर निर्भर करती है। शहर के आसपास के गांवों के रूप में बस्तियों की बड़ी संख्या हे जो शहर पर निर्भर है। शहर की एक प्रमुख विशेषता है। नदी में दून घाटी का स्रोत है और पवित्र नदी यमुना नदी के साथ जो बाद में मर्ज करता है काली नदी भी दो नहरों जो विशेष रूप से इस प्रयोजन के लिए किए गए दो पुलों के माध्यम से नदी में मिला है। आधुनिक सिविल वास्तु आश्चर्य जो गवाह और इंजीनियरिंग के इस टुकड़े में चमत्कार करने के लिए कुछ जिज्ञासु वदसववामते से और शहर के चारों ओर आकर्षित करती है। अगर राज्य एवं केन्द्र सरकार समुचित सुविधाएं प्रदान करें तो इस जगह एक अच्छा पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित होने की क्षमता है।

प्रस्तावनाः–
किसी भी राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों का उतना ही महत्व होता है जितना कि मानव संसाधनों का। वास्तव में मानवीय संसाधन एवं प्राकृतिक संसाधन एक ही गाड़ी के दो पहियों के समान है। मानवीय संसाधन से तात्पर्य, जनसंख्या, उसकी शिक्षा, कार्य कुशलता, दूरदर्शिता तथा उत्पादकता से होता है। मानवीय संसाधन एक ऐसी पूंजी है जो किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के विकास में पूर्ण सहयोग प्रदान करती है।
आज भारत राष्ट्र की जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ रही है उस अनुपात में न तो खाद्यानों के उत्पादन में वृद्धि हो रही है और न ही ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना हो रही है। अतः राष्ट्र के सामने चिन्ता का विषय यह है कि यदि इसी गति से यह जनसंख्या बढती रही तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत राष्ट्र विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र होगा और हम इस कृषि प्रधान देश की जनसंख्या की पर्याप्त मात्रा में भोजन सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकेंगे। अतः अब राष्ट्र के सम्मुख एक ही विकल्प है कि वह ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि में नई तकनीकों, बीजों, उर्वरकों का प्रयोग करके प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि करें। बेकार पड़ी बंजर, ऊसर परती व अन्य कृषि योग्य भूमि को कृषि के अन्तर्गत उपयोग में लायें। ग्रामीण अविकसित क्षेत्रों में औद्योगीकरण को प्रोत्साहन दे ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी को कम किया जा सके। आज लोग रोजगार भी तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों में शहरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। कारण स्पष्ट है कि उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर समाप्त होते नजर आ रहे हैं। शहरों में जनसंख्या का अतिक्रमण हो रहा है। पानी, बिजली और यातायात व प्रदूषण जैसी गम्भीर समस्याओं से शहरी जनसंख्या को सामना पड़ रहा है। यदि हम इस समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं तो हमें ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगीकरण द्वारा जनसंख्या के लिए रोजगार के अवसर जुटाने होंगे तभी शहरों की ओर जनसंख्या का पलायन रूक सकेगा।

पोषण एवं स्वास्थ्य–

उत्तम पोषण उत्तम स्वास्थ्य का जनक है। पोषक तत्त्व ही शरीर की सामान्य वृद्धि एवं विकास के आधार हैं। पोषक तत्त्वों के आधार पर यह ही उत्तम, स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विचार शील जीवन जिया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के विटामिन्स की खोज के बाद विज्ञान ने पुनः विज्ञान ने पोषण विज्ञान का आविष्कार किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद प्रोटीन पर खोज करने पर उपरोक्त तथ्य संज्ञान में आया। वैज्ञानिकों ने गत वर्षों में पोषक तत्त्वों एवं स्वास्थ्य को बहुत करीब से परखने की कोशिश की एवं इस ओर विशेष ध्यान दिया। यह उगती हुई स्वीकारोक्ति है कि जीवन के प्रथम चरण में उत्तम पोषण उत्तम स्वास्थ्य एवं उत्तम जीवन का आधार है। परन्तु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक एवं आर्थिक विकास में पोषण एवं कुपोषण का महत्त्व बाधक है। यह वास्तविकता है कि पोषक तत्त्व भूमि की उर्वरा शक्ति एवं उत्पादन क्षमता से सम्बन्धित होते हैं। अधिक उत्पादक भूमि में पोषक तत्त्वों का स्तर ऊँचा एवं कम उत्पादक भूमि में पोषक तत्त्वों का स्तर नीचा होता है। परन्तु कहीं–कहीं अपवाद भी मिलता है तथा कम उत्पादक भूमि में भी पोषक तत्त्वों का स्तर ऊँचा पाया गया है। शायद ऐसा इस क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से भी सम्भव हो सकता है।

खाद्य एवं पोषण–

कभी–कभी खाद्य एवं पोषण को समान समझ लिया जाता है जो कठोर सत्य नहीं है। खाद्य (भोजन) विभिन्न खाद्य पदार्थों का साधारण मिश्रण होता है। खाद्य पदार्थ की परिभाषा भी यही है कि जो खाद्य वस्तु खाई जाती है, उसे खाद्य कहते हैं।

खाद्य पदार्थ का वर्गीकरण–

खाने में जो तत्त्व खाद्य पदार्थ के रूप में खाये जाते हैं उनमें प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन्स, खनिज एवं पानी होता है। अधिकांश खाद्य पदार्थों में इस सभी का मिश्रण होता है। परन्तु इनका अनुपात अलग–अलग होता है। प्रोटीन, वसा एवं कार्बोहाइड्रेट, जल के साथ मिल कर एक श्रेष्ठ भोजन तैयार करते हैं। मानव शरीर निम्न तत्त्वों में मिला कर बना है।

सारणी–1

मानव शरीर की संरचना

तत्त्व	प्रतिशत
पानी	65
प्रोटीन	15
वसा	11
खनिज	08
कार्बोहाइड्रेट	01

संदर्भः– ब्रॉक जे०एफ०ः– रीसेंट एडवांसिज इन ह्यूमैन न्यूट्रेशन, चर्चिल, लन्दन.

कभी–कभी खाद्य पदार्थों का वर्गीकरण उनकी शक्ति दायक गुणवत्ता के आधार पर भी किया जाता है जैसेः–

(1) शक्तिवर्धक खाद्य पदार्थः–

इन खाद्य पदार्थों में कार्बोहाइड्रेट की अधिकता होती है तथा ये शक्तिवर्धक होते हैं, इनमें अनाज, चीनी पौधों की जड़ें एवं शाखाएं आदि हैं।

(2) शरीर को सौरष्टव बनाने वाले खाद्य पदार्थः–

इन खाद्य पदार्थों में प्रोटीन की मात्रा अधिक पाई जाती है इनमें माँस, लीवर, मछली, दूध एवं दालें आदि हैं।

(3) स्वास्थ्य रक्षक खाद्य पदार्थः–

ये खाद्य पदार्थ प्रोटीन, विटामिन्स एवं खनिज के धनी होते हैं। इनमें दूध, अंडा, लीवर, हरी पत्तियों वाली सब्जियां, फल आदि आते हैं।

भारत में अक्सर खाद्य पदार्थ के रूप में प्रयोग किया जाने वाला भोजन स्वास्थ्य रक्षक तत्त्वों की कमी वाला होता है, जिसकी वजह से विभिन्न प्रकार के रोगों का जन्म मिलता है। भोजन का मुख्य कार्य शरीर में (1) शक्ति उत्सर्जन (2) शारीरिक संरचना एवं निर्माण (3) उत्तकों (टीशूओं) के कार्यों को निरन्तर स्थापित करना एवं कार्यरत रखना।

पोषण विज्ञान के अनुसार बच्चों और वयस्कों को पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं में भिन्नता होती है। बच्चां को वयस्कों की अपेक्षा अधिक पोषक तत्त्वों वाले भोजन की आवश्यकता होती है। उत्तम स्वास्थ्य के लिए संतुलित भोजन आवश्यक होता है। वैसे तो वसा और कार्बोहाइड्रेट तत्त्व ही मुख्य रूप से शरीर में उर्जा उत्पन्न करते हैं, इन दोनों की कमी होने पर प्रोटीन उर्जा उत्पन्न करती है। वैसे प्रोटीन का मुख्य कार्य उतकों का बनाना और उनकी मरम्मत करना ही है। अतः ऐसा भोजन जिसमें केवल एक ही प्रकार के तत्त्व मौजूद हों स्वास्थ्यदायक नहीं हो सकता। हम केवल प्रोटीन युक्त अथवा केवल कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन द्वारा भी अपनी आवश्यकता की पूरी उष्मा (उर्जा) प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु ऐसा भोजन स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं होता। इस प्रकार के भोजन से शरीर की सभी प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं नहीं होती। अतः अपने भोजन में हमें सभी प्रकार के तत्वों को उचित मात्रा में सम्मलित करना चाहिए। पोषण वैज्ञानिकों ने बताया है कि जो भोजन संतुलित नहीं होता उसका ठीक से पालन नहीं हो पाता एवं पाचन क्रिया ठीक न होने से शरीर उसका पूरा सदुपयोग नहीं कर पाता। परिणाम स्वरूप विभिन्न बीमारियों को जन्म देता है। इन वैज्ञानिकों ने यह भी ज्ञात किया है कि एक ग्राम प्रोटीन से 4 कैलोरी, एक ग्राम कार्बोहाइड्रेट से 4 कैलोरी तथा एक ग्राम वसा से 9 कैलोरी, उष्मा प्राप्त होती है। उनके अनुसार एक औसत मनुष्य के लिए प्रतिदिन इन तत्त्वों की आवश्यकता निम्नवत होनी चाहिए।

भू–उपयोगः– कृषिगत, अकृषिगत–

कासगंज जनपद की जनता का मुख्य पेशा कृषि है। यहाँ की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या सीधे कृषि पर निर्भर है तथा 15 प्रतिशत जनसंख्या कृषि सम्बन्धी कार्यों से अपना जीवन निर्वाह करते हैं शेष औद्योगिक क्षेत्र में नौकरी करते हैं। लगभग सम्पूर्ण भूमि का 72 प्रतिशत भाग कृषि करने योग्य है तथा उसमें विभिन्न खाद्यान्न उत्पन्न किये जाते हैं। शेष 28 प्रतिशत भाग पर आवास, उद्यान, चरागाह एवं अकृषिगत कार्य जैसे– सड़कें, रेलवे लाइन, खेल के मैदान हैं। हाल में जनपद के गाँवों में हुई चकबन्दी के दौरान बिना किसी नियोजन के प्रत्येक गाँव में अकृषिगत भूमि जिसमें फसल पैदा नहीं की जा सकती लगभग 17 प्रतिशत कटौती खेतीहर भूमि से करके सड़क, चकरोड़, खलियान, खेल के मैदान, हरिजन आवास, स्कूल, शमशान, कब्रिस्तान आदि के लिये भूमि छोड़ दी गई।

भू–उपयोग (2013–14)–

शोध क्षेत्र की सम्पूर्ण भूमि कृषि कार्य में प्रयोग नहीं की जाती बल्कि अकृषिगत कार्यो में भी इसका प्रयोग किया जाता है जैसे– आवासी योजनाओं, सड़कें, रेलवे मार्ग, कूड़ा डालने का स्थान, कब्रिस्तान, शमशान, कच्ची सड़कें, झील या निचले क्षेत्र (जहाँ पानी भर जाता है) के तटबंध आदि में भी प्रयोग की जाती है। यद्यपि यहां की भूमि समतल एवं उपजाऊ है, लेकिन झाऊ एवं झूण्ड साफ करके खेती करना भी बहुत महंगा पड़ता है तथा यह घास पुनः शीघ्रता से उग आती हैं। कुछ ऐसी भूमि भी है जो छोटे–छोटे पेड़ों एवं घास से ढकी रहती है। कुछ चरागाह के लिए छोड़ दी जाती है। कुछ भूमि गीली एवं नम होने के कारण दलदली रहती है। जिस पर खेती करना सम्भव नहीं है। कुल 12,407 एकड़ यानि 4.81 प्रतिशत भूमि उपरोक्त श्रेणी की है। 3374 एकड़ यानि 1.30 प्रतिशत भूमि पर झाड–झंकाड खड़े हैं। 9033 एकड़ यानि 8.35 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य नहीं है। उपरोक्त भूमि को कृषि योग्य बनाना भी आसान नहीं है। क्योंकि वर्षा ऋतु में सारी मेहनत पर पानी फिर जाता है तथा भूमि पुनः अपनी मूल स्थिति को प्राप्त कर लेती है। आधुनिक कृषि मशीनों द्वारा इन क्षेत्रों में कृषि की जाने लगी है, जिससे भविष्य में इन क्षेत्रों की प्रगति भी की आशा प्रबल हुई है।

पोषण तत्त्वों की कमी से जनित रोग (सामाजिक तत्त्व)–

भारत में प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्नता मिलती है। इसलिए यहाँ पर जगह–जगह से क्षेत्र (गाँव) चुनकर उनका योजनाबद्ध तरीके से सर्वेक्षण करना ही ठीक है तथा क्षेत्रीय स्तर पर ही सर्वे करना उचित है। क्षेत्र चुनने के बाद उसका विस्तृत अध्ययन जैसे– धरातल, बनावट, ढ़ाल, जल प्रवाह प्रणाली, जलवायु एवं मिट्टी का अध्ययन समक्षमता से परन्तु एक समान इकाई वाले क्षेत्रों को एक साथ रखकर करना चाहिए। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र से समान गुण वाले गाँवों का चयन करना ही उचित होगा। गाँवों के उद्देश्य हीन एवं अक्रमबद्ध चयन से अच्छे परिणाम सामने नहीं आयेंगे। इसलिए गाँवों का चयन उद्देश्य पूर्ण होना चाहिए। क्योंकि मानव ही भू–उपयोग को प्रभावित करता है वहीं भू–प्रबन्ध एवं खाद्यान्न संकलन करता है एवं इन कार्यों में पूंजी लगाता है।

जनपद में गाँवों का चयन करने के पश्चात प्रत्येक फसल में, प्रत्येक गाँव का गहराई से अध्ययन करना होगा एवं यह देखना होगा कि उन गाँवों में भूमि का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है। वहाँ कैसे खाद्यान्न पैदा किये जा रहे

हैं एवं वे पोषण तत्त्वों की दृष्टि से कितने सम्पन्न हैं तथा किस तत्त्व की कमी से बीमारी के शिकार हो रहे हैं। उनके खाद्यान्न में कितने पोषण की क्षमता है। कम से कम वर्ष में दो बार अवश्य भ्रमण करना होगा। पहला खरीफ की फसल में एवं दूसरा रबी की फसल में। गाँव के खेतों का मानचित्र लेखपाल से लिया जा सकता है एवं उनका क्षेत्रफल तहसील स्तर के कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक खेत के मानचित्र पर वहाँ जाकर खेत में बोई गई फसल (भू–उपयोग) को अंकित किया जायेगा। खेत पर जाकर वहाँ मौजूद किसानों से फसलों एवं खाद्यानों के बारे में विभिन्न प्रश्न पूछकर, आंकड़े एकत्र किये जायेंगे। फसल सम्बन्धी जानकारी के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की होने वाली बीमारियों के बारे में भी जाना जा सकता है। किसानों से प्रति एकड़ विभिन्न फसलों के उत्पादन के बारे में भी प्रश्न पूछे जा सकते हैं। उनसे फसलों की किस्म, फसल चक्र तथा कृषि मे प्रयोग किये जाने वाले यंत्रों की जानकारी भी प्राप्त की जा सकेगी। इसके अतिरिक्त कृषि करने की विधि, सिंचाई के साधन एवं सामान्य रूप से जीवन स्तर का भी पता चलेगा।

संरचना, धरातल, जलवायु, मिट्टी और सामान्य भू–उपयोग के आधार पर अध्ययन क्षेत्र को समान गुण एवं तत्त्वों के आधार पर विभाजित किया जायेगा। परन्तु समान गुण वाले क्षेत्रों में से कम से कम एक गाँव का अध्ययन अवश्य किया जायेगा और चुने हुए गाँव में पोषण तत्त्वों की विशेष रूप से जानकारी प्राप्त की जायेगी। इन चुने हुए गाँवों के अध्ययन में भौतिक तत्त्वों के अतिरिक्त वहाँ पर सिंचाई की सुविधा, आवागमन के साधन, बाजार की सुविधा, लगाई गई पूंजी एवं कृषि प्रबन्ध पर भी गहराई से अध्ययन किया जायेगा।

निष्कर्ष–

उत्तम निष्कर्ष इस बात से निकाला जा सकता है कि शोधकर्ता ने भी क्षेत्र में विभिन्न चुनिन्दा गांवों का इसी आधार पर सर्वेक्षण किया है एवं यह जानने का प्रयास किया है कि जनपद कासगंज के विभिन्न गांवों की जनसंख्या के खाद्य पदार्थों में कौन–कौन से पोषण तत्त्वों की कमी है, जिनके कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियां जन्म लेती हैं। सर्वेक्षण के अन्त में शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि खाद्यानों की उत्पत्ति एवं भूमि की उर्वरता शक्ति का पोषण तत्त्वों के उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है तथा पोषण तत्त्वों की कमी से जनित रोगों एवं इनके उत्पादन का गहरा सम्बन्ध है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. Bhatia, S.S. 1967 Measure of Agricultural efficiency in U.P. Ecomopri cyeogapics Volume 03
2. Singh J and Dhillom SS 1982 Agricultural Geography
3. Momoria, C.B. 1986 Agree problems of Jhoj Kitab Mahal Pvt. Allahabad
4. Amani, K2 1986 Agricultural leneluse in Aligarh distance
5. Barsal, P.C. 1988 Agricultural problems in India
6. Givis V.V. 1988 Lavome problems in India Industries
7. Chopara K 1998 Agricultural development in Punjab
8. सिग वी.पी. 1998 कृषि भूगोल
9. Dr. Panday, J.N. 1999 कृषि भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर ळमवहतंचील टवसण 02
10. Sharma B.L. 1999 कृषि भूगोल
11. Tiwari, R.C. 1999 कृषि भूगोल
12. Agrawal N.N. 1999 Development of Large Scale, India sties in U.P.
13. नायणी पी.एन. 2000 सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण

संदर्भ पत्रिका सूची

1. सांख्यिकी पत्रिका 2012 जनपद कासगंज में
2. सामाजिक आर्थिक समीक्षा 2012 कासगंज जनपद में
3. आर्थिक जनगणना 2012
4. जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 2012
5. जिला गजेटियर जनपद कासगंज